विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

एक नई पहल के बहाने किताबों के बारे में कुछ ज़रूरी बातें!

किताबों, और विशेष रूप से हिंदी की किताबों और उनमें भी विशेष रूप से साहित्यिक किताबों की कोई भी चर्चा थोडी देर में इस बात पर आकर टिक जाती है कि किताबें बहुत महंगी हैं। ख़ास तौर पर जब हम अंग्रेज़ी की किताबों से तुलना करते हैं तो यह बात सही भी लगती है। किसी और की बात न करके अगर अपनी ही बात करूं तो मेरी लगभग पौने तीन सौ पेज की किताब की कीमत पांच सौ रुपये है। हालांकि यह सजिल्द संस्करण की कीमत है, अगर इतने ही पन्नों के पेपरबैक संस्करण की बात करें तो वह भी ढाई तीन सौ रुपये से कम का नहीं होगा। कहना अनावश्यक है कि अंग्रेज़ी किताबों की कीमत इनसे काफी कम होती है। यह बात मैंने पाठक के नज़रिये से कही है। अगर आप प्रकाशक के नज़रिये से देखें तो पता चलेगा कि हिंदी में ज़्यादातर किताबें सरकारी खरीद में जाती हैं और वहां बीस–तीस प्रतिशत कमीशन तो वैध रूप से ही देना होता है। टेबल के नीचे जो आदान–प्रदान होता है, वह अलग है। प्रकाशकों का यह भी कहना है कि अंग्रेज़ी में किसी किताब की जितनी प्रतियां बिक जाती हैं, उतनी हिंदी में नहीं बिकती है, इसलिए भी लागत बढ़ जाती है। इन बातों को नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता है। इनके अलावा एक मुद्दा हिंदी में किताबों की उपलब्धता का भी है। मुझ जैसे लोगों की जो लिखते भी हैं और पढ़ते भी हैं, बड़ी शिकायत यह भी है कि हिंदी का प्रकाशक व्यक्तिगत पाठक को अपनी किताबें बेचने में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं रखता है। उसे जितना व्यवसाय करना है उतना वह सरकारी बिक्री करके कर लेता है। इसके जवाब में प्रकाशक शायद यह कहे कि जब कोई खरीदता ही नहीं है तो वह अपनी किताब बेचे किसे?

सवाल यह है कि क्या इन समस्याओं का कोई हल नहीं निकाला जा सकता है? और यह सवाल मुझे सूझा है राजस्थान बल्कि जयपुर के एक नामी प्रकाशक की एक पहल से। इस प्रकाशक ने 1995 में शुरू हुए अपने प्रकाशन के तीसवें साल में एक अनूठी योजना की घोषणा की है। यह प्रकाशक चुनिंदा साहित्यकारों की लघु कलेवर की रचनाओं का एक सेट प्रकाशित कर रहा है। इस सेट में हर पुस्तिका बत्तीस पेज (आवरण पृष्ठ अलग) की होगी और उस पुस्तिका का आकार सामान्य डिमाई (8.5x5.5 इंच) पुस्तक के आकार से आधा (4.25x5.5 इंच) होगा। इस आकार की पुस्तक को आसानी से जेब में रखा जा सकता है। महत्वपूर्ण बात है इस कितबिया का मूल्य। प्रकाशक के अनुसार तीस किताबों का यह सेट मात्र एक सौ पचास रुपये में, अर्थात प्रति पुस्तक पांच रुपये में उपलब्ध होगा। प्रकाशक द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार इस सेट में इक्कीस कविता पुस्तकें, तीन ग़ज़ल संठाह, एक लघु कथा संग्रेह, और पांच कथेतर गद्य की किताबें हैं। इनके लेखकों में अनेक सुपरिचित नाम शामिल हैं। विधाओं के लिहाज़ से भी यहां वैविध्य है, हालांकि कविताओं की तरफ झुकाव कुछ ज़्यादा है। कविता संग्रह कम करके कुछ कहानी संग्रह भी जोडे जा सकते थे, हालांकि बत्तीस पेज में ज़्यादा से ज़्यादा चार कहानियां ही आ पातीं।

पांच रुपये में एक किताब, चाहे वह कितनी ही दुबली क्यों न हो, बहुत आकर्षक है। अच्छी बात यह भी है कि प्रकाशक ने पूरा सेट खरीदने की बाध्यता नहीं रखी है, इसलिए कोई भी एक–दो–तीन–चार पुस्तकें खरीद कर अपनी पढ़ने की ललक को पूरा कर एक शुरुआत कर सकता है। यहीं यह भी याद कर लेना उचित होगा कि कुछ बरस पहले इसी प्रकाशक ने दस–दस रुपये वाली दस–दस किताबों के एक के बाद एक तीन सेट प्रकाशित करके हिंदी प्रकाशन जगत में भारी हलचल पैदा की थी। उन सेटों को हाथों–हाथ लिया गया था। वैसे पुरानी पीढ़ी के लोगों को हिन्द पॉकेट बुक और राजकमल पॉकेट बुक्स की भी ज़रूर याद होगी। हिंद पॉकेट बुक्स की घरेलू लाइब्रेरी योजना किसी ज़माने में बेहद लोकप्रिय थी और मुझ जैसे विपन्न युवा ने भी इस योजना की कृपा से बहुत सारी उम्दा किताबें पढ़ ली थीं। बाद वाले ज़माने में कुछेक अन्य प्रकाशकों ने भी ऐसे प्रयोग किए और वे प्रयोग काफी हद तक सफल भी रहे। वाराणसी के एक प्रकाशक ने अनेक नामी लेखकों की रचनावलियां बहुत कम कीमत पर उपलब्ध कराई थीं। हाल के वर्षों में दिल्ली के एक बड़े प्रकाशक ने भी एक–एक दो–दो रचनाओं वाली किताबियाएं छापीं लेकिन वह प्रयोग दीर्घजीवी नहीं हुआ।

इस बात पर भी गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए कि कैसे लेखक को उसके श्रम का प्रतिफल मिले। श्रम का प्रतिफल मिलने लगेगा तो वह अपने लेखन कर्म को अधिक समय भी दे सकेगा। लेखक और प्रकाशक के बीच विश्वास और सद्भाव का रिश्ता होना चाहिए, जो दुर्भाग्य से अभी नहीं है। लेखक प्रकाशक से नाराज़ है और प्रकाशक लेखक से असंतुष्ट। यह स्थिति बदलनी चाहिए और इसके लिए दोनों ही पक्षों को ईमानदार प्रयास करने होंगे।

अभी मैंने जयपुर के प्रकाशक की जिस अभिनव योजना की चर्चा की उस योजना में एक बड़ी बाधा वितरण और पुस्तकों की उपलब्धता की है। चलिये, जयपुर का पाठक तो प्रकाशक के यहां जाकर भी सेट या अपनी पसंद की किताबें ले आएगा, जो जयपुर से बाहर है वह कैसे इस योजना का लाभ ले सकेगा? ख़ुद प्रकाशक ने भी कहा है कि हाल में डाक व्यय बहुत बढ़ गया है इसलिए जो लोग इस सेट को डाक से मंगवाना चाहेंगे उन्हें इसके लिए पिचहत्तर रुपये और देने होंगे। मतलब यह कि जितने की किताब उससे आधा डाक व्यय। यह किसी को भी अखरेगा। भले ही सरकार द्वारा की गई इस वृद्धि का सभी पढ़ने लिखने वालों ने विरोध किया है, इस बात की कोई उम्मीद नहीं है कि सरकार अपना यह कदम वापस ले। तो अगर आपको डेढ सौ रुपये वाली तीस किताबें चाहिएं तो पिचहत्तर रुपये डाक व्यय खर्च करने ही पड़ेंगे। और मुझे भय है कि बहुत सारे लोग इस बात से बिदक जाएंगे।

क्या इस समस्या का कोई समाधान सम्भव है? क्या इस बात पर विचार किया जा सकता है कि बड़े–बड़े स्टोर्स पर भी ये किताबें विक्रयार्थ उपलब्ध कराई जाएं? अमरीका में मैंने बड़ी–बड़ी मॉल्स में किताबें बिकती देखी हैं। क्या इस बात की भी कोई संभावना है कि हम पुस्तक प्रेमी अपने–अपने मोहल्लों में इन किताबों के वितरक बनें, या जिन दुकानों आदि से हम खरीददारी करते हैं उन्हें ये किताबें रखने के लिए प्रेरित करें! बेशक इन सुझावों को क्रियान्वित करने के लिए प्रकाशक को भी अतिरिक्त श्रम करना पड़ेगा, उसका कुछ पैसा शायद डूबे भी लेकिन इस तरह के साहसिक प्रयोग करके ही कोई राह बनाई जा सकती है। और ये सारी बातें केवल किसी एक प्रकाशक की किताबों के लिए नहीं हैं। असल बात तो यह है कि किसी भी तरह किताबों को लोगों तक ले जाया जाए!

यहीं एक बात और। हम अपने साहित्यिक आयोजनों में औपचारिकताओं पर जैसे विशिष्ट अतिथियों को मालाएं पहनाने और उन्हें स्मृति चिह्न देने आदि पर काफी खर्चा करते हैं। क्या इन सबकी बजाय हम पुस्तकें नहीं दे सकते? ऐसा करने से पुस्तकों की बिक्री बढ़ेगी और लोगों तक पुस्तकें पहुंचेंगी भी। ऐसा करने में मुझे कोई व्यावहारिक दिक्कत नज़र नहीं आती है। हो सकता है कुछ लोग यह कहें कि जो पुस्तक उन्हें दी गई है वह या तो पहले से उनके पास है या फिर उसमें उनकी दिलचस्पी नहीं है। लेकिन यह बात तो इससे भी अधिक मालाओं, इधर चलन में आए दुपट्टों और स्मृति चिह्नों पर भी लागू होती है। मालाएं तो प्रायः उसी समय उतारकर रख दी और बाद में फेंक दी जाती हैं, दुपट्टों और स्मृति चिह्नों के बारे में बात न की जाए तो ही अच्छा होगा। किताब हम किसी और को भी भेंट में दे सकते हैं, अगर उसमें हमारी रुचि न हो। सबसे बड़ी बात तो यह कि ऐसा करके हम पुस्तक संस्कृति का प्रसार ही करेंगे। यह काम स्वाभाविक रूप से सबसे पहले साहित्यिक संगठनों को करना चाहिए।

हिंदी किताबों के संदर्भ में प्रायः उनकी गुणवत्ता को लेकर भी अनेक प्रतिकूल बातें की जाती हैं। जैसी हमारे यहां स्थितियां हैं, बहुत कम लेखक ऐसे हैं जिन्हें उनके लिखे का कोई प्रतिफल मिलता है। उनकी किताब अगर प्रकाशक बिना पैसे लिए छाप दे तो वे अपने को भाग्यशाली मान लेते हैं। पारिश्रमिक और रॉयल्टी तो कल्पनातीत है। इस बात पर भी गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए कि कैसे लेखक को उसके श्रम का प्रतिफल मिले। श्रम का प्रतिफल मिलने लगेगा तो वह अपने लेखन कर्म को अधिक समय भी दे सकेगा। लेखक और प्रकाशक के बीच विश्वास और सद्भाव का रिश्ता होना चाहिए, जो दुर्भाग्य से अभी नहीं है। लेखक प्रकाशक से नाराज़ है और प्रकाशक लेखक से असंतुष्ट। यह स्थिति बदलनी चाहिए और इसके लिए दोनों ही पक्षों को ईमानदार प्रयास करने होंगे। लेखक संगठनों को भी इस काम में आगे आना चाहिए। यह सब कोई और नहीं करेगा। हमको ही करना होगा।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

शिक्षा का बाजार-जिसको जैसी चाहिए खरीद लेता है

प्रो. अशोक कुमार

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यक्तित्व के समग्र विकास एवं राष्ट्र के नागरिक तैयार करने में किसी भी देश में शिक्षा की अहम भूमिका है। देश के विकास में शिक्षा महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। इसे समय और दुनिया के बदलते परिदृश्य की जरूरतों के अनुरूप बदलना चाहिए। यह मानवता का सामना करने वाले सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक नैतिक और आध्यात्मिक मुद्दों पर गंभीर रूप से प्रतिबिंबित करने का अवसर प्रदान करता है। हमारी अर्थव्यवस्था को आगे बढाने के लिए अधिक कुशल और शिक्षित लोगों की आवश्यकता है। हमारे आसपास कई भारतीय हैं जो अपनी क्षमताओं और कौशल के लिए जाने जाते हैं। भारत को शिक्षा हब के रूप में विकसित करने या वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक समृद्ध भागीदार बनने के लिए भारत को विशेष रूप से अनुसंधान और विकास के साथ सामान्य और उच्च शिक्षा में शिक्षा को गुणात्मक रूप से मजबूत करना है।

वर्तमान मे शिक्षा का बाजार अपने आप में एक पूर्ण बाजार हो गया है।

पूर्ण बाजार का अर्थ है कि जिस वस्तु की मांग और पूर्ति, आपस में पूरी तरह मेल खाए, जैसे चाय का बाजार। आप जिस समय चाहें, जितनी मात्रा में चाहें, जिस दाम पर चाहें, आकाश–पाताल सब जगह,माँग के अनुसार उपलब्ध हो जाती है (5 रुपये से 150 रुपए में)।

उसी तरह से शिक्षा का बाजार है। जिस दाम पर चाहिए जिस जगह चाहिए, जिस तरीके से चाहिए, जिस विषय मे चाहिए। जिस स्तर पर चाहिए, आपको उपलब्ध हो जाती है। सस्ती वाली, महँगी वाली। असलवाली, नकलवाली । कामवाली, बेकाम वाली। स्कूल वाली, घर वाली । पैसे वाली, मुफ़्तवाली। सरकार वाली, माफिया वाली। जो भी लोग चाहें।

आई.आई.टी. जैसे संस्थानों में 15–20 प्रतिशत शिक्षकों की कमी है। आज देश का सम्पूर्ण शिक्षा क्षेत्र योग्य अध्यापकों की कमी से जूझ रहा है! विकसित देश में शिक्षा का भविष्य अस्थायी शिक्षकों के सहारे पर निर्भर है जिनको विभिन्न नाम से जाना जाता है : अस्थायी, एडहॉक, संविदा, पार्टटाइमर, अतिथि, मानद, विजिटिंग, आवश्यकता आधारित, एमओयू प्रोफेसर, शोध विद्वान, ऑनलाइन अतिथि संकाय, स्व अध्ययन।

वर्तमान में शिक्षा को सेवा की जगह व्यापार की कोटि में रखा जा रहा है ! आज बाजार की मांग के अनुरूप पाठ्यक्रम और पूंजीपतियों के अत्यधिक व्यवसायिक लाभ के लिए महाविद्यालयों एवं तकनीकी संस्थाओं की मान्यता दी जा रही है।

शिक्षा बाजार के बारे में पूरी सूचना सबको है। जिसको जिस विषय पर जैसी चाहिए, खरीद लेता है। नहीं तो विदेश जाकर ले लेता है। किस बात का रोना। मिट्टी के दाम पर सोना तो नहीं मिलेगा।। सरकार भी नहीं दे सकती और माफिया भी। सोने के दाम पर ही सोना मिलेगा। और चोरी बेईमानी तो हर वस्तु और सेवा के बाजार में है।

शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक संसाधनों की जरूरत है, और ये आए कहाँ से, यही सोचने की जरूरत है ।

–प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय

भीलवाड़ा के काशीपुरी स्थित श्याम मंदिर में हुआ भव्य श्रृंगार

भीलवाड़ा । भीलवाड़ा के काशीपुरी स्थित श्री श्याम मंदिर में आज श्री श्याम बाबा का भव्य पितांबरी बागा श्रृंगार किया गया। इस अलौकिक दर्शन के लिए हजारों श्रद्धालु उमडे और पूरे मंदिर परिसर में "जय श्री श्याम" के जयकारे गूंज उठे।

अध्यक्ष सुरेश पोद्दार ने बताया श्री श्याम सेवा समिति के अध्यक्ष सुरेश पोद्दार ने कहा कि पितांबरी बागा का विशेष महत्व है और यह श्रद्धालुओं के लिए बहुत शुभ माना जाता है। उन्होंने कहा, "यह आयोजन हर वर्ष धूमधाम से किया जाता है और बाबा के भक्तों की आस्था दिनों–दिन बढ़ रही है। समिति हमेशा प्रयासरत रहती है कि सभी श्रद्धालुओं को अच्छे से दर्शन और सुविधाएं मिलें।'

श्री श्याम सेवा समिति के मीडिया प्रभारी पंकज अठावाल ने बताया कि आज सुबह से ही श्रद्धालुओं का तांता लगा हुआ था। मंदिर को रंग–बिरंगे फूलों और रोशनी से भव्य रूप से सजाया गया था। भजन–कीर्तन की मधुर ध्वनि से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया।

उन्होंने आगे कहा, "समिति के सभी सदस्य और सेवादार इस आयोजन को सफल बनाने में दिन–रात मेहनत कर रहे हैं, ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो।" पितांबरी बागा को शुभता, समृद्धि और मंगलकामना का प्रतीक माना जाता है। भक्त इसे अपने गुल्लक में रखने के लिए ले जाते हैं, जिससे व्यापार में वृद्धि होती है। वहीं, इसे घर में रखने से सुख–शांति बनी रहती है। यह आस्था और श्रद्धा का प्रतीक है, जिसे भक्तगण बड़े प्रेम और भक्ति भाव से अपने साथ ले जाते हैं।

श्याम बाबा का भव्य पितांबरी बागा श्रृंगार प्रसिद्ध पंडित रूपेंद्र शुक्ला और रवि शास्त्री द्वारा किया गया। उनकी पारंपरिक विधि–विधान से किए गए श्रृंगार ने बाबा के स्वरूप को और अधिक दिव्य बना दिया। सुबह से ही श्रद्धालु मंदिर में उमड़ पड़े। बाबा के पितांबरी बागा दर्शन के लिए भक्तजन बड़ी श्रद्धा के साथ पहुंचे। बाबा श्याम की आरती के दौरान भक्तों ने पुष्प अर्पित किए और आशीर्वाद प्राप्त किया। इस पावन अवसर पर समिति के सभी पदाधिकारी, सदस्य और सेवादार उपस्थित रहे। नितिन, राहुल, राघव, हरीश, बृजेश, अक्षत और नारायण सहित अन्य समिति सदस्यों ने आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाबा श्याम के जयकारों के बीच भक्तों ने भक्ति रस में डूबकर आनंद प्राप्त किया।

हजारों की संख्या में ग्रामीणों ने उठाया दंगल का लुफ्त

रूपवास । कस्बे के मेला मैदान में नगर पालिका के तत्वावधान में आयोजित किए जा रहे बसंत पशु मेला एवं प्रदर्शनी में रविवार को विशाल कुश्ती दंगल का आयोजन विधायक प्रतिनिधि एवं पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष ऋषि बंसल के मुख्यातिथ्य में किया गया। वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता तहसीलदार अमित शर्मा ने। विशिष्ट अतिथि के रूप में वृत्ताधिकारी नीरज शर्मा,पूर्व सरपंच राकेश भातरा, पूर्व जिला परिषद सदस्य वीर विक्रम सिंह परमार, डब्बू बंसल,धीरज शुक्ला,मंडी अध्यक्ष दिलीप अंधाना ,राजेश पराशर,दिलीप चाहर,विशाल कौशल, सोनू परमार, मनोज टोंटपूर मौजूद थे। इस दौरान कुश्ती दंगल में स्थानीय विधायक की ओर से 61 हजार की आखिरी कुश्ती कराई गई। आखिरी कुश्ती हरकेश पहलवान हाथरस एवं सागर पहलवान पानीपत की मध्य हुए। जिसमें भारत केसरी हरकेश पहलवान हाथरस ने सागर पहलवान पानीपत को महज 9 मिनट में पटकनी देकर आखिरी कुश्ती जीत ली। नगरपालिका अधिशाषी अधिकारी योगेश कुमार पिप्पल ने बताया कि इस विशाल कुश्ती दंगल में सर्वप्रथम 20 रुपए से कुश्तियों की शुरुआत कराई गई। इसके बाद 50 रुपए,100 रुपए,200 रुपए, 500 रुपए,11 सौ रुपए,2100 रुपए,31 सौ रुपए,51 सौ रुपए,11 हजार, 21 हजार, 31 हजार तक की कुश्ती कराई गई। इस दौरान कुश्ती दंगल में दिल्ली,हरियाणा,पंजाब,मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान समेत दूर दराज से आए पहलवानों ने जबरदस्त तरीके से अपने दांव पेंच दिखाए।

इस दौरान कुश्ती दंगल में महिला पहलवान भी आई। जिसमें गामिनी चाहर बाटी ने 5100 की स्पेशल कुश्ती जीती। वहीं कुश्ती दंगल में जोड़ी मिलाने का काम पवन पहलवान, कौशू पहलवान, मखन पहलवान, कुश्ती दंगल में भामाशाहों ने भी बढ़चढ़कर भाग लिया।

108 यूनिट रक्तदान

मदनगंज–किशनगढ़,(निस)। वीर गुर्जर युवा मंडल की और से भगवान देवनारायण की जयंती की पूर्व बेला एवं किसान नेता पूर्व केन्द्रीय मंत्री राजेश पायलट की जयंती पर रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। एडवोकेट राजेश गुर्जर टोकडा ने बताया की राजकीय यज्ञनारायण अस्पताल में आयोज्य शिविर में 108 यूनिट रक्तदान किया।

इससे पूर्व भगवान देवनारायण व राजेश पायलट के चित्र के समक्ष श्रद्धा सुमन अर्पित कर भावांजली दी। विधायक डॉ विकास चौधरी युवा मण्डल अध्यक्ष श्योजीराम चौहान, पूर्व सभापति जगदीप गुर्जर, जिला परिषद सदस्य गणेश तंवर, ब्लॉक अध्यक्ष मोहित खळेलवाल, पूर्व अध्यक्ष भोजराज बागड़ी, कोषाध्यक्ष शंकर बागडी, रोहित धाभाई, नन्दलाल फामडा, भेरुलाल बजाड, देवीसिंह बारवाल, भागचन्द तेडवा, अशोक कोली, रमेश जूवाणा, तेजपाल बमाड, कानाराम बागडी, करतार, रामावतार, अजित चौहान, शैतान मावता, नोरत फागणा, देवा बजाड़, कमल गुर्जर, प्रकाश बावला, भेरू गुर्जर, शिवजी सहित कई आदि समाजबंधु उपस्थित रहे। संचालन भागचन्द तेडवा व एडवोकेट राजेश गुर्जर टोंकडा ने किया।

बसंत पंचमी पर्व पर निकला विशाल जुलूस

मेड़ता सिटी (निसं.)। मेड़ता नामदेव टाक क्षत्रिय दर्जी समाज नवयुवक मंडल के तत्वाधान में बसंत पंचमी पर्व को लेकर विशाल शोभायात्रा निकाली गई। यात्रा का जगह जगह पर भव्य स्वागत किया गयां।

■ विशाल शोभायात्रा गाजे बाजे के साथ नामदेव समाज भवन से निकाली गई जो शहर के मुख्य मार्गों से निकाली गई

नामदेव नवयुवक मंडल अध्यक्ष विनोद रुणवाल ने बताया कि मेड़ता नामदेव टाक दर्जी समाज द्वारा बसंत पंचमी पर्व को लेकर विशाल शोभायात्रा गाजे बाजे के साथ नामदेव समाज भवन से निकाली गई जो शहर के मुख्य मार्गो से होते रघुनाथ मंदिर, सब्जी मंडी, पुराना चिकित्सालय रोड़, चारभुजा चौक, सोनी चौक, पद्म कुम्हारों का मोहल्ला होते हुए अपने गंतव्य स्थान पहुंची।

जहां पर समाज के नागरिकों व महिलाओं का भव्य स्वागत कर प्रसाद दिया गया। वही समाज की महिलाओं व बच्चों ने नाचते गाते विशाल शोभायात्रा का आनंद लिया।

यात्रा का जगह जगह पर भव्य स्वागत किया गया।

इस मौके मेड़ता नामदेव समाज अध्यक्ष श्याम सुंदर खत्ती, लाल चंद नागर, अखिल भारतीय मारवाड़ी टांक क्षत्रिय दर्जियान ट्रस्ट पुष्कर के पूर्व अध्यक्ष नवरत्न मल तोलंबिया, घेवर चंद तोलंबिया, कैलाश नेरिया, वीरेंद्र वर्मा, मूल चन्द बाटू, श्याम लाल सर्वा, लक्ष्मीनारायण बाटू, भगवती लाल टेलर, सरदार मल टेलर, राजकमल डिडवानिया, दिनेश ऊंटवाल, सुरेश तारवान, प्रेम चंद ऊंटवाल, विजय तारवान, नरेंद्र तोलंबिया, गीता वर्मा, सुनीता वर्मा, संतोष नागर, सोनू रूनवाल, प्रकाश सर्वा, विजयराज खत्ती, महावीर कंवलिया, मनोज वर्मा, विष्णु कटोच, विनोद इडिवाल, ममता वर्मा, मंजू ऊंटवाल सहित कई समाज की महिलाएं व पुरुष के साथ बच्चे शामिल थे। वही पीपा दर्जी समाज ने किया नामदेव दर्जी समाज का स्वागत दर्जी समाज के सामाजिक एकता को बढ़ावा देने के लिए पीपा दर्जी ट्रस्ट ने दर्जी समाज मेड़ता का माला व साफा एवं दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया।

गिरादड़ा में लगेंगे 11 लाख पेड़, विश्व मानचित्र पर उभरेगा पाली

पाली, (नि.सं.)। सिकिक्म राज्यपाल ओम प्रकाश प्रकाश माथुर ने कहा कि पर्यावरण प्रदूषण फैला है और उससे जो हानिया हो रही है जो हमने कोरोना में देखा और पर्यावरण प्रदूषण से दुष्प्रभाव फैल रहे है उससे निजात के लिये सभी अपना प्रयास करते है लेकिन हम दूसरों के भरोसे ना रहकर इस बदलाव की शुरूआत हम सभी मिलकर करे और सभी ये निश्चय करें कि हम सब मिलकर एक पेड जरूर लगायेगें । सिकिक्म के राज्यपाल माथुर आज रविवार को जिले के गिरादड़ा में मोहनलाल सायरचन्द कवाड चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा आयोजित एक लाख वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सरकार प्रशासन तो प्रयास करते ही है लेकिन जब तक जनजागरूकता व जनसहभागिता जब प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर से ना हो तो तब तक ये कार्य सफल नही हो सकता है इसके लिये शुरूआत प्रत्येक व्यक्ति को करनी होगी। इस अवसर पर उन्होंने सिक्किम में पर्यावरण संरक्षण की योजनाओं के बारे में बताया और नीति में बनाकर कुछ ऐसा करने का आहा्न किया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये राज्यसभा सांसद मदन राठौड ने भी समारोह को सम्बोधित करते हुये कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पेड मां के नाम अभियान चलाया और कहा कि प्रदेश सरकार में भी मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भी पौधारोपण के लिये वृक्षारोपण अभियान चलाया और करोडो पेड लगाये है ।उन्होने कहा कि पौधारोपण से पर्यावरण को लाभ प्राप्त होता है और ये पुण्य का कार्य है । इस अवसर पर कार्यक्रम को कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत ने भी सम्बोधित किया और पर्यावरण प्रकृति को सरंक्षित करने के लिये पेड लगाने पर जोर दिया साथ ही इस पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस अवसर पर पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने सम्बोधित करते हुये कहा कि केन्द्र के साथ प्रदेश सरकार ने इसके लिये वृहद् अभियान चलाया है और प्रयास किया है कि पेड जिन्दा भी रहे उन्होंने कहा कि गिरादडा में जो पौधे कवाड ट्रस्ट द्वारा लगाये जा रहे है जो 7 लाख पौधे लगेगे उसका सरंक्षण पांच साल बाद सरकार सरंक्षण करेगी। इस अवसर पर कार्यक्रम में पूर्व सांसद पाली पुष्प जैन ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया इस अवसर पर जिला प्रमुख रश्मि सिंह, पूर्व विधायक ज्ञानचन्द पारख ने भी सम्बोधित करते हुये पौधारोपण करने पर जोर दिया। कार्यक्रम में इससे पहले आये हुये अतिथियों का स्वागत किया गया । इस अवसर पर कवाड चैरिटेबल ट्रस्ट के शांतिलाल कवाड व ट्रस्ट के अन्य सदस्यों ने पौधारोपण का परिचय दिया और कहा कि यहां आगामी दिनों में 7 से 11 लाख पौधे लगाये जायेंगे। इस अवसर पर पर्यावरण प्रेमी आर के नैयर ने भी पौधारोपण के फायदे बताये । पर्यावरण को होगा लाभ आक्सी हब बनेगा लगेगे 11 लाख पेड तापमान मे लगभग 10 डिगी्र की गिरावट होगी । पाली विश्व के मानचित्र पर उभरेगा रिसर्च , पर्यावरण पर्यटन शिक्षा व रोजगार में भी वृद्धि होगी।

राज्यपाल माथुर , कैबिनेट मंत्री कुमावत , राज्यमंत्री शर्मा , सांसद राठौड व अन्य जनप्रतिनिधियो अधिकारियों ने पौधारोपण किया। इस अवसर पर राज्यपाल माथुर ,कैबिनेट मंत्री कुमावत , सांसद राठौड जिला कलक्टर एलएन मंत्री ,पुलिस अधीक्षक चुनाराम , आयोजककर्ताओ आदि ने भी पौधारोपण किया। इस अवसर पर राज्यपाल माथुर व अन्य अतिथियों ने पाली पंचायत समिति प्रधान मोहिनी देवी व इस क्षेत्र में अच्छा कार्य करने के लिये विभिन्न लोगो को राज्यपाल ने सम्मानित किया। इससे पहले राज्यपाल को कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने पर गार्ड ऑफ आनर दिया गया और जिला कलक्टर मंत्री और एसपी जाट ने अगवानी कर स्वागत किया। कार्यक्रम में जिला कलैक्टर एलएन मंत्री ,जिला पुलिस अधीक्षक चुनाराम जाट , डीएफओ पी बाला मुरूगन , एडीएम भवानी सिंह , उपखंड अधिकारी पाली विमलेन्द्र राणावत , कवाड ट्रस्ट के पदाधिकारी , यूआईटी पूर्व अध्यक्ष संजय ओझा, सुनील भंडारी , नरेश ओझा समेत अनेक अधिकारीगण मौजूद रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 3 फरवरी, 2025

माघ मास, शुक्ल पक्ष, षष्ठि तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, रेवती नक्षत्र रात्रि 11:17 तक, साध्य योग रात्रि 3:02 तक, कौलव करण सायं 5:45 तक, चन्द्रमा रात्रि 11:17 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–मकर, चन्द्रमा–मीन, मंगल–मिथुन, बुध–मकर, गुरू–वृष, शुक्र–मीन, शनि–कुम्भ, राहु–मीन, केतु–कन्या राशि में।

आज रवि योग रात्रि 11:17 तक है। कुमार योग रात्रि 11:17 से रात्रि 4:38 तक है। आज शीतला षष्ठि है। पंचक रात्रि 11:17 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:39 तक, शुभ 9:58 से 11:19 तक, चर 2:02 से 3:23 तक, लाभ–अमृत 3:23 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 7:15, सूर्यास्त 6:07

मेष
घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज मन में असंतोष बना रहेगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में परेशानियां दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्य के लिए दिन ठीक नहीं है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक–सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक
परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच–विचार हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

धनु
घर–परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर–परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
`मानसिक तनाव दूर होगा। वर्तमान में चल रही परेशानियां दूर होने लगेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।